आधुनिक संस्कृत साहित्य में हास्यव्यंय

सुभाष यादव

संस्कृत वांग्मय भी इसका अपवाद नहीं है। काल के प्रभाव से वैदिकसाहित्य लौकिकसाहित्य के पथ से पालि, प्राकृत, अपभ्रंश तक पहुँचा, स्वातन्त्र्योत्तर काल में पारम्परिक विधाओं के साथ–साथ नवीन विधाओं का आविर्भाव संस्कृत भाषा में हुआ। इस काल की प्रमुख विधाओं में छन्दोमुक्त कव्य, क्षेत्रीयकाव्य, पैराडी, हास्यव्यंय,शोकगीत, इत्यादि प्रमुख विधाएँ हैं।

यद्यपि आधुनिक संस्कृत विधाएँ पारम्परिक संस्कृत विधाओं में परिलक्षित होती रही है फिर भी आधुनिक संस्कृत कविता में इसका स्वरूप और स्पष्ट होने के साथ–साथ लोकप्रिय भी है। प्राचीनकाल में जहाँ हास्यव्यग्य विधा के एक–दो श्लोक ही प्राप्त होते हैं वहीं आधुनिक काल में इस विधा को लेकर शताधिक काव्य लिखे जा चुके हैं। 1940 ई0 में जन्मे श्री प्रशस्यमित्र शास्त्री ने संस्कृत कवि सम्मेलनों में हास्य कवि के रूप में इस विधा को लोकप्रिय बनाया।